एक इंच का बच्चा जन्मता है कंगारू

प्रमोद भार्गव

सत्तर किलोग्राम का भारी भरकम और सात फीट की ऊंचाई वाले कंगारू का नवजात शिशु बमुश्किल एक इंच लम्बा और मात्र डेढ़ ग्राम वज़न वाला होता है। कुदरत के इस करिश्मे के साथ कंगारू का शरीर और भी कई अजूबों से जुड़ा है। ऑस्ट्रेलिया का पर्याय और पहचान बने कंगारू की ऑस्ट्रेलिया में आबादी इतनी बढ़ गई है कि अब ये ऑस्ट्रेलियाई किसानों और फसलों के लिए संकट बने हुए हैं।

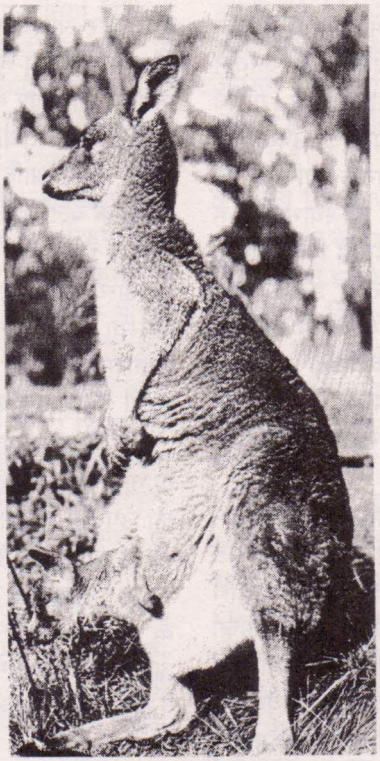

अम्मा की गर्माहट से अपने भोजन का मुआयना करता नन्हा शिशु

कंगारू 50 प्रकार के जंतुओं के समूह का प्रतिनिधित्व करता है। इनमें मस्की रेट प्रजाति का कंगारू सबसे कम वज़नी (पांच सौ ग्राम) और सबसे बड़ा भूरा व लाल कंगारू 90 किलोग्राम का होता है। सामान्यतः इनकी ऊंचाई छह फीट होती है लेकिन सात फीट के भी कंगारू होते हैं। इतने भारी भरकम शरीर का प्राणी होने के बावजूद कंगारू 25 से 30 फीट की छलांग लगाने में कुशल होते हैं। पृथ्वी पर इसका अस्तित्व बहुत पुराना माना जाता है। तीन करोड़ साल पुराने कंगारूओं के जीवाश्म अब प्राप्त हो चुके हैं। कंगारू के नवजात शिशु के क्रमबद्ध विकास के लिए इसके पेट से एक थैली लटकी होती है। इस कारण इसे दुनिया के अजीबोगरीब प्राणियों में गिना जाता है।

कंगारू ऑस्ट्रेलिया का राष्ट्रीय चिन्ह है और समूचे महाद्वीप में पाया जाता है। ऑस्ट्रेलिया की राष्ट्रीय वायुयान सेवा 'क्वाण्टास' के विमानों को कंगारू के बने चित्र से ही पहचाना जाता है।

कंगारू स्तनधारी जीव है। इसके शरीर का अगला हिस्सा पिछले की तुलना में बहुत कम वज़नी होता है। इस कमी का संतुलन बनाए रखने का काम कंगारू की भारी-भरकम पूंछ करती है। इसके अगले पैर छोटे और पिछले पैर बड़े होते हैं। जब यह चारों पैरों के बल धरती पर खड़ा होता है तो पिछले पैरों को घुटनों से मोड़ लेता है। पिछले पैरों के बल ज़मीन पर खड़े होकर चलते वक्त इसकी पूंछ धरती पर रगड़ खाती है और निशान छोड़ती हुई चलती है।

इनका प्रजनन काल 29 से 38 दिन का होता है। मादा कंगारू एक बार में एक ही बच्चे को जन्म देती है। अपवाद स्वरूप एक हज़ार में औसतन एक मादा दो बच्चों को जन्म देती है। प्रसव क्रिया के ठीक पहले मादा थैली को भीतर से साफ कर लेती है और एक विशिष्ट स्थिति में बैठ जाती है ताकि प्रसव क्रिया सुगमता से सम्पन्न हो जाए। यह अपनी पीठ किसी पेड़ या चट्टान से टिका लेती है; पिछले दोनों पैरों को पसार लेती है; पैरों के बीच में इसकी पूंछ रहती है। जब बच्चा गर्भ से बाहर निकलता है तो वह मात्र एक इंच के आकार वाला और डेढ़ ग्राम (23 ग्रेस) भार का एक मांसपिण्ड होता है। इस पर पॉलीथीन सा खोल चढ़ा होता है। नवजात शिशु की आंखें बंद रहती हैं। इसके फेफड़े, मस्तिष्क, नाक, कान व अन्य संवेदी अंग और जननांग अविकसित रहते हैं। शरीर पर रोएं भी नहीं होते। प्रसव